महोदय, अंत में जिस योग्यता, दक्षता और धैर्य के साथ आपने इस सत्र का संचालन किया उसके लिए मैं आपका धन्यवाद करती हू। मैं यहां उपस्थित अपने सभी सहयोगियों के लिए भी मंगल कामना करती हूं।

प्रधानमंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी) : अध्यक्ष महोदय, पावस का सत्र अपनी समाप्ति पर है। आज ओणम का त्यौहार है। मैं इस अवसर पर सभी देशवासियों और सदन के सदस्यों का अभिनन्दन करना चाहता हूं। कल गणपति विसर्जन है। गणपति वुद्धि के देवता हैं। हमें उनसे भी कुछ लेने की आवश्यकता है।

अध्यक्ष महोदय, आपने सत्र की उपलब्धियों का उल्लेख किया – सचमुख कई मामलों में सदन के काम उल्लेखनीय रहे हैं। अगर दिन में काम नहीं हुआ, तो हम रात में बैठे, देर तक बैठे। काम खत्म करने की दृष्टि से तो यह ठीक है लेकिन दिनचर्या के हिसाब से अच्छी बात नहीं है। आपने बड़े महत्वपूर्ण कदम उठाये हैं। सदन में अनुशासन रहना चाहिये। जब हम प्रतिपक्ष में थे, तब से हम अनुशासन की बात कर रहे हैं। जो नये-नये प्रतिपक्ष में आये हैं, उनके सहयोग की आवश्यकता है।

यहां अलग-अलग विचाराधाराएं हैं। उन विचारधाराओं को सदन में रखने का अवसर मिलता है। मैं सरकार की उपलब्धियां नहीं गिनाता, लेकिन जब विश्व में आर्थिक दृष्टि से एक मंदी आई हुई है, तब हम अपनी अर्थव्यवस्था को सम्भाल कर आगे बढ़ने में सफल हो रहे हैं। यह बात उल्लेखनीय है और इसका सबको स्वागत करना चाहिए। मैं आंकड़ों में नहीं जाता कि किस क्षेत्र में हमने कितनी उपलब्धि की है, मैं इसका भी विस्तार से उल्लेख नहीं करूंगा, क्योंकि यह अवसर उसके लिए नहीं है, आज हम इस बात पर प्रसन्नता प्रकट कर रहे हैं कि अच्छे वातावरण में सत्र की समाप्ति हो रही है। यह वातावरण केवल समाप्ति के समय नहीं रहना चाहिए। ऐसा वातावरण प्रारंभ में भी रहना चाहिए और मध्य में भी रहना चाहिए।

चर्चा के लिए समय मिल सकता है, सरकार कभी चर्चा करने से कतराई नहीं है। हम अपने विचार स्पष्टता के साथ रखते हैं। आरोप लगाये जाते हैं उनका खंडन करते हैं। लेकिन आरोपों-प्रत्यारोपों की भी एक सीमा होनी चाहिए। लोकतंत्र बिना मर्यादा के नहीं चल सकता और अगर मर्यादा स्वेच्छा से हो, स्वत: स्फूर्त हो, सभी दलों के सदस्य मिलकर आपस में बैठकर फैसले कर लें, तो मैं समझता हूं कि एक अच्छे वातावरण की सृष्टि होगी।

सत्र आज समाप्त हो रहा है। इस सत्र की उपलब्धियां हम गिना रहे हैं। लेकिन जनमानस में सदन की जो तस्वीर उभरती है, वह ऐसी नहीं है जिस पर भारतीय लोकतंत्र, जो संसार का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, वह गर्व कर सके। इसमें सबके सहयोग से स्थिति सुधारी जा सकती है। मैं आपका अभिनन्दन करता हूं, आपने बड़ी कुशलता के साथ सदन का संचालन किया है और सभी सदस्यों का भी मैं इस अवसर पर अभिनन्दन करता हूं।

अपराह्न 1.23 बजे

राष्ट्रगीत

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : अब माननीय सदस्य खड़े हो जाएं क्योंकि अब ''बंदे मातरम की धुन'' बजाई जाएगी।

(राष्ट्रगीत की धुन बजाई गयी)

अध्यक्ष महोदय : अब सभा अनिश्चित काल के लिए स्थगित होती है।

अपराह्न 1.24 बजे

तत्पश्चात लोक सभा अनिश्चित काल के लिए स्थगित हुई।